शास्त्रीय वादन कला: चुनौतियां एवं महिलाएं- एक अध्ययन

Dr. Gaurav Jain

Assistant Prof. Music Vocal, Rajasthan Sangeet Sansthan Jaipur

शोध सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत में शास्त्रीय वादन कला के क्षेत्र में अनेकानेक कारणों से पुरुष प्रधानता रही है किन्तु समय के साथ-साथ परिवर्तनशीलता ने तथा बहुत सी महिला कलाकारों ने अपने दृढ़ संकल्प एवं मेहनत से वादन कला के क्षेत्र में उच्च स्थान बनाया।

मुख्य शब्द: पेशेवर, पारंपरिक, पखावज,शहनाई, घराना ।

उदेश्य

शास्त्रीय वादन कला के क्षेत्र में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की महिला वादकों के सांगीतिक योगदान को समस्त संगीत जगत के समक्ष प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि /पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में वर्णनात्मक शोध प्रविधि तथा विषय संबंधित साहित्य का अध्ययन तथा समीक्षा का प्रयोग किया गया है ।

गीतं वाद्यं नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते

अर्थात भारतीय संगीत की परिभाषा में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों ही विधाएँ समावेशित हैं। भारतीय समाज में पुरुष एवं महिला , दोनों ही संगीतकार के रूप में अपना कला प्रदर्शन करते आये हैं। किन्तु जैसा कि प्राचीन काल से ही हमारे समाज में प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष प्रधानता देखी गई है तो संगीत का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा।

तीनों विधाओं पर दृष्टिपात करें तो इन में नृत्य कला क्षेत्र में सबसे अधिक महिलाओं का योगदान रहा है। गायन के क्षेत्र में पुरुषों एवं महिलाओं दोनों का ही योगदान लगभग समान रहा किन्तु तीनों विधाओं में वादन के क्षेत्र में महिलाओं की क्रियाशीलता पुरुषों की तुलना में न्यून रही है अतः यह कहना अनुचित नहीं कि वादन कला पुरुष प्रधान रही है। संगीत में पुरुषों की प्रधानता या यूं कहें कि महिलाओं की न्यून क्रियाशीलता के अनेकानेक कारण रहे हैं। इन कारणों को समझने हेतु भारतीय शास्त्रीय संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की समीक्षा की जानी आवश्यक है। प्राचीन काल में वैदिक परंपरा में देखें तो भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति सामवेद की ऋचाओं के गायन से हुई और अधिकांशतः

पुरोहित वर्ग द्वारा ही गायन एवं यज्ञ कार्य किए जाते थे।संगीत का ज्ञान रखने वाली कुछ स्त्रियों के नाम जैसे आपाला, लोपा मुद्रा ,घोषा आदि के अतिरिक्त और कोई बहुत अधिक नाम इतिहास में उल्लेखित नहीं है ।

प्राचीन कालीन गुरु शिष्य परंपरा हो या मध्यकालीन घराना परंपरा, दोनों में ही संगीत शिक्षा हेतु 10 से 12 वर्ष गुरु ग्रह में रहकर शिक्षा प्राप्त करने की परंपरा थी उस समय की सामाजिक एवं पारिवारिक व्यवस्था तथा परंपराओं में स्त्रियों को यह स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी कि अपने घर से बाहर जाकर गुरु ग्रह में रहकर संगीत शिक्षा प्राप्त कर पाएं। अतः ऐसे में केवल पुरुषों को ही यह अवसर प्राप्त हुआ। अपवाद स्वरूप उस समय की कुछ महिला संगीतकारों के नाम इतिहास में उल्लेखित हैं किंतु उनमें अधिकांशतः वे महिलाएं हैं जो की किन्हीं संगीतकारों की पुत्रियां थीं।

साथ ही, सामाजिक मानदंडों एवं पर्दा प्रथा के कारण चेहरा ढके बिना सार्वजनिक रूप से जाना अनुचित माना जाता था। ऐसे में संरक्षकों के समक्ष संगीत कला की प्रस्तुति देना स्त्रियों के लिए असंभव था और उस समय अधिकांश संरक्षक शाही दरबार एवं ज़मींदार होते थे , इसके अतिरिक्त मंच नहीं होता था। ऐसे में वे महिलाएं भी प्रस्तुति नहीं दे पायीं जो की अपने संगीतकार पिता से संगीत सीखीं थीं।

यह सभी चुनौतियां संगीत की तीनों ही विधाओं की शिक्षा में समान रुप से उपस्थित रहीं किन्तु समय परिवर्तन एवं शिक्षा आदि के प्रभाव स्वरूप समाज में और लोगों की मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन हुए जिनके कारण संगीत शिक्षा की ये सभी बाधाएं शनैः शनैः दूर होती गई और महिलाओं की संगीत के क्षेत्र में भागीदारी बढ़ी।

इन सब के बावजूद भी वादन कला के क्षेत्र में अभी भी बहुत सी चुनौतियां शेष रहीं जिनके कारण महिलाओं को इस क्षेत्र में आने के लिए अधिक प्रेरित नहीं किया जाता। ये चुनौतियां हैं - सितार की अपेक्षा सारंगी, रुद्र वीणा, सुरबहार ,सरोद जैसे वाद्यों में पुरुष तत्व की मौजूदगी, शहनाई-बांसुरी जैसे वाद्यों में फेफड़ों की शक्ति एवं साँस की आवश्यकता। वाद्यों का रखरखाव, महंगी कीमत, लाने ले जाने में असुविधा, विद्यालयों में गायन-नृत्य की अपेक्षा वाद्य शिक्षा का अभाव, अधिकांशतः टैलेंट शोज में केवल गायन को प्राथमिकता, आदि। जीविकोपार्जन की दृष्टि से भी देखें तो पुरुषों के लिए वाद्य संगतकार के रूप में कार्य करने का भी विकल्प रहता है किन्तु महिलाओं के लिए यह क्षेत्र भी अधिक सुलभ नहीं क्योंकि इसके लिए मुख्य कलाकार के साथ अभ्यास हेतु बहुत समय देने की आवश्यकता होती है, अधिकांश संगीत कार्यक्रम रात को होते हैं, यात्राएं करनी पड़ती हैं,इन सभी कारणों के चलते महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा बहुत कम अवसर मिलते हैं।

वादन कला के क्षेत्र की उपरोक्त वर्णित अनेकानेक चुनौतियों के बावजूद भी हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीतके विकास यात्रा में महिला वादक कलाकारों के नाम की सूची बहुत लंबी है। यहां तक की सितार वाद्य, जिसे उसकी बनावट, ध्वनि, वादन शैली में स्त्री तत्व दृष्टिगत होने के कारण स्त्रियों के लिए सबसे उपयुक्त वाद्य कहा गया है, के अतिरिक्त सरोद ,सारंगी,वीणा ,तबला, पखावज, बांसुरी आदि सभी वाद्यों के साथ महिला कलाकारों के नाम जुड़े।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक हुई इन महिला कलाकारों ने संगीत समाज को पुनः स्मृत करवाया है कि संगीत की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती भी एक स्त्री हैं, जिनके हाथों में वीणा (जिसे पुरुष प्रधान माना गया) वाद्य होता है और प्रथम वीणा वादक कहलाती हैं । साथ ही इन महिलाओं ने शास्त्रीय वाद्यों के वादन को लेकर जो धारणाएं बनीं

हुई थीं कि शारीरिक बल, सामाजिक बंधन आदि कारणों से कुछ वाद्य स्त्रियों के लिए सीखना असंभव अथवा कठिन है, को ग़लत साबित कर दिया।
इन्होंने न केवल रूढ़ीवादिता को समाप्त किया है बल्कि अपनी लगन एवं निरंतर अभ्यास से अपना एक मुकाम हासिल किया है और सम्पूर्ण स्त्री वर्ग के लिए प्रेरणा बनीं।

प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक हुईं ऐसी ही कुछ महिला कलाकारों के जीवन परिचय, शिक्षा ,संघर्ष , सफलता तथा संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान का वर्णन निम्न प्रकार से है

1.सुप्रसिद्ध सारंगी वादक 'अरुणा नारायण कल्ले'

अंतरराष्ट्रीय कलाकार प्रसिद्ध सारंगी वादक पंडित रामनारायण की सुपुत्री अरुण नारायण कल्ले का जन्म 1954 में मुंबई में हुआ। आप पेशेवर रूप से सारंगी बजाने वाली प्रथम भारतीय महिला के रूप में जानी जाती हैं।

संगीत शिक्षा-

1973 में 18 वर्ष की आयु में अपने पिता से सारंगी वादन की शिक्षा प्राप्त करने का निर्णय लिया। वे बताती हैं कि उनके पिता ने उनके लिए नासिक से एक सारंगी खरीदी थी जो पहले एक साधु के पास होती थी और सन 2019 तक उन्होंने इसी सारंगी का वादन किया। पिता से शिक्षा प्राप्त करते हुए 3 साल के भीतर ही आप ने नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स में अपनी प्रथम प्रस्तुति दी। इसके बाद अपने पिता के साथ ncpa में सुरबहार वादक अन्नपूर्णा देवी एवं प्रसिद्ध तबला वादक अहमद जान थिरकवा के साथ मास्टर क्लास के लिए गईं। पुणे में अपने विवाह पश्चात भी अपने पिता से शिक्षा लेना जारी रखा अपने सारंगी जैसे वाद्य जो कि अपनी भौतिक विशेषताओं एवं वादन शैली ,दोनों ही दृष्टि से अविकसित वाद्य में से एक था और गायन के साथ संगत वाद्य के रूप में इसकी पारंपरिक भूमिका ने भी इसे और पिछड़ा दिया था। ऐसे में अपने पिता की भांति सारंगी को एकल वाद्य के रूप में लोकप्रिय बनाने की दिशा में काम किया। आपके पिता और आपके प्रयासों से सारंगी वाद्य अब भारतीय प्रदर्शन कलाओं की मुख्य धारा में अच्छी तरह से स्थापित हो गया है।

प्रस्तुतियां ÷

उन्होंने संगीत की अन्य शैलियों के साथ भी सहयोग किया है। उन्होंने कनाडा के टैफेलम्यूजिक बारोक ऑर्केस्ट्रा के साथ काम करते हुए एंटोनियो विवाल्डी के *फोर सीजन्स* में वायलिन सोलो की जगह *सारंगी बजाई और बाद में* सैन फ्रांसिस्को के क्रोनोस चौकड़ी के लिए संगीत तैयार किया ।

2. सुप्रसिद्ध प्रथम महिला संतूर वादक - डॉ. वर्षा अग्रवाल

राजस्थान के झालावाड़ में एक पारंपरिक राजस्थानी डॉक्टर परिवार में जन्मी डॉ. वर्षा अग्रवाल के दादा डॉ. कल्याणमल अग्रवाल एक डॉक्टर थे, जिन्हें संगीत का शौक था। उन्हें (दादा को) लगता था कि उनका बेटा संगीत को अपनाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। डॉ. वर्षा ने राजस्थान से कश्मीर तक की अपनी यात्रा पूरी की , जिसमें वह कश्मीर के सूफिया घराने और सोपोरी बाज की पहली महिला शास्त्रीय एकल संतूर वादक के रूप में उभरी हैं।

डॉ वर्षा का कहना है कि"मेरे दादाजी मुझे संगीत कार्यक्रमों में ले जाते थे और मुझसे पूछते थे कि क्या मैं संगीत सीखना चाहूंगी। संतूर ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया और मुझे अक्सर इस वाद्य यंत्र को बजाने की इच्छा होती थी।" चूंकि संतूर संगीत कश्मीर के सूफियाना घराने का था, इसलिए डॉ. वर्षा के लिए कश्मीर जाकर इसे सीखना मुश्किल था। उनके पहले गुरु इलाही बख्श थे जिन्होंने स्वर्गीय श्री गिरधारी लालजी डांगी से तबला की शिक्षा ली थी।

डॉ. वर्षा ने कहा, "संतूर के मेरे पहले गुरु उज्जैन के पंडित ललित महंतजी ने मुझे संतूर सिखाने से यह कहते हुए मना कर दिया था कि बनिया परिवार में शादी करने से मैं संतूर बजाना भूल जाऊंगी। मैंने गुरुजी को एक पत्र लिखा, जिसमें बताया कि मेरे गुरु, माता-पिता और पति संतूर वादक हैं। मैं तबला जादूगर पंडित ललित महंत और प्रसिद्ध संतूर वादक संतूर के संत, तारों के राजा लेफ्टिनेंट पद्म पंडित भजन सोपोरीजी की गंडाबंध शिष्या हूं।"

डॉ. वर्षा अग्रवाल को 2018 में भारत के राष्ट्रपति और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 'फर्स्ट लेडी ऑफ संतूर' पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही मध्य प्रदेश सरकार ने उन्हें संतूर के क्षेत्र में दुर्लभ वाद्य वादन शिखर सम्मान से सम्मानित किया है। उन्हें कई देशों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहली संतूर सितार जुगलबंदी बजाने का श्रेय जाता है।

वर्षा अग्रवाल का दृढ़ विश्वास है कि उनका जन्म बाधाओं को तोड़ने के लिए हुआ है। उन्होंने यह बात तब सच साबित की जब उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत के पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान क्षेत्र में कदम रखा और दुनिया भर के शो में लोकप्रियता और पहचान पाने वाली पहली भारतीय महिला शास्त्रीय एकल संतूर वादक बन गईं।

आज, वर्षा कश्मीर के सूफियाना प्रदर्शनों की सूची में कुछ महिला संतूर वादकों में से एक हैं और एक कुशल तबला वादक भी हैं। साथ ही संगीत में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं।

3. प्रथम महिला दिलरूबा वादक "सरोजा"

सरोजा दिलरुबा बजाने वाली कुछ कलाकारों में से एक हैं। पी.वी. शनमुगम की पुत्री और शिष्या तथा वेल्लासामी की पोती, सरोजा लगभग पिछले 40वर्षों से इस वाद्य यंत्र का अभ्यास कर रही हैं।

वह शायद एकमात्र एकल रिकॉर्डिंग कलाकार हैं जो इस वाद्य यंत्र पर काम कर रही हैं और अक्सर इसे संगत के रूप में प्रयोग किया जाता है।

करुणा को व्यक्त करने के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त, 'दिलरुबा' को ए.आर. रहमान नेअपने बहुत से गीतों जैसे- ‘उर्वसी उर्वसी’ (कधलान) हिट हो गया। 'हैरा हैरा हैरा हैरा' (जीन्स), 'पूंगात्रिले' (उइरे) और 'उइरे उइरे' (बॉम्बे), में बखूबी प्रयोग किया है। ये सभी जल्दी-जल्दी आए जिससे सरोजा को अपना वाद्य बजाने का भरपूर मौका मिला।

1995 में, उन्होंने बेल्जियम ऑर्केस्ट्रा के साथ अमेरिका में और यूरोप में संगीतकार हैंस वर्मीर्च के साथ प्रदर्शन किया। यह वास्तव में प्राचीन वाद्य के लिए एक शानदार वापसी थी। 12 सदस्यों वाला ऑर्केस्ट्रा जिसने 6 जुलाई 1995 को अमेरिका में रामायण का प्रदर्शन किया, अपनी तरह का अनूठा था। वह थारशहनाई और दिलरुबा पर लोक शैली की धुनें निकालने में सक्षम थी। दिलरुबा पर पॉप शैली का थोड़ा सा प्रयोग काफी नवीनता थी।

रिकॉर्डिंग की बात करें तो, उन्हें एम.एस. विश्वनाथन, इलियाराजा, ए.आर. रहमान, देवा, वी. कुमार, अनु मलिक, युवान शंकर राजा, कार्तिक राजा, देवी श्री प्रसाद, हैरिस जयराज, हमसलेखा, कीरवानी, शंकर गणेश, चंद्रबोस, उपेंद्र कुमार, दीना और जिब्रान के साथ रिकॉर्डिंग करने का सौभाग्य मिला। जिस सहजता से सरोजा 19 फ्रेट्स को संभालती हैं, उन्हें सूक्ष्म समायोजन करने के लिए हिलाती हैं और फिर मध्यमा स्ट्रिंग को बजाते हुए 22 सहानुभूतिपूर्ण तारों पर काम करती हैं, वह उनकी दक्षता को दर्शाता है।उनके संग्रह में प्रमुख राग हैं कीरावनी, कन्नड़ और शुभ पंतुवराली।

सरोजा अपनी संपूर्णता में मधुर संरचना को प्रस्तुत करने में उत्कृष्ट हैं, आवश्यक अंशों में मूड को चित्रित करती हैं, एक भिन्नता के साथ, इसे एक विशिष्ट छाप देती हैं।

4. दक्षिण भारत की प्रथम महिला सारंगी वादक- मनोमणि

सुप्रसिद्ध दिलरुबा वादक सरोजा जी की पुत्री मनोमणि दक्षिण भारत की प्रथम महिला सारंगी वादक हैं। आपने सन् 2009 से अपनी रुचि के अनुरूप सारंगी सीखने का निर्णय लिया और वह भी केवल ऑनलाइन वीडियो देखकर सीख प्रारंभ किया। उसके बाद आपने दिल्ली के गुरुकुलम में गुलाम साबिर खान से विधिवत सारंगी वादन की शिक्षा प्राप्त करना प्रारंभ किया।

सारंगी वादन में अपने समक्ष आई चुनौतियों के बारे में वे कहती हैं कि "सारंगी के तार आपके नाखूनों के क्यूटिकल्स द्वारा पकड़े जाते हैं इसलिए शुरू में बहुत ज्यादा रक्त बहता था और त्वचा खुरदरी हो जाती है। साथ ही यह वाद्य दक्षिण भारत में बहुत दुर्लभ है और वहाँ इसे बनाने वाले बहुत कम लोग हैं। मैं मेरे गुरु से प्राप्त सारंगी का वादन करती हूँ जो 100 साल से भी अधिक पुरानी है।

मनोमणि बहुत से संगीत निर्देशकों के साथ काम कर चुकीं हैं।

5. प्रथम महिला शहनाई वादक- बागेश्वरी क़मर

बागेश्वरी क़मर भारत की पहली महिला शहनाई वादक हैं। बागेश्वरी क़मर ने उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान से शहनाई सीखी। 1983 में चंडीगढ़ में उन्हें शहनाई क्वीन का खिताब दिया गया। बागेश्वरी ने सोलो कैसेट के अलावा उस्ताद

बिस्मिल्लाह ख़ान के साथ जुगलबंदी भी रिकॉर्ड की है। उन्होंने 1988 में रूस में भारत महोत्सव में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

बागेश्वरी क़मर जगदीश प्रसाद क़मर की बेटी हैं, जो उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान के एकमात्र शिष्य थे, जो पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली के अनुसार उनके साथ शामिल हुए थे। जगदीश 1946 में 10 साल की उम्र में उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान से जुड़ गए थे। वे बनारस में उस्ताद के घर पर रहते थे और शहनाई सीखते थे।

छह साल की उम्र में बागेश्वरी क़मर शहनाई अपने हाथ में थामे गुहार लेकर अपने पिता के पास गई थी। क्या वह उसे शहनाई बजाना सिखाएंगे? किन्तु ये कह कर मना कर दिया कि यह लड़कियों के सीखने का वाद्य नहीं है।

उनके पिता के इनकार ने उन्हें शहनाई से दूर नहीं किया, लेकिन उन्हें चुपके से सीखने के लिए मजबूर किया, उन्हें दूसरे छात्रों को सिखाते हुए सुनना। उनकी माँ उनकी विश्वासपात्र और इस निष्क्रिय विद्रोह में मार्गदर्शक थीं।

तीन साल बाद, जब उनके पिता ने उन्हें शहनाई बजाते हुए देखा, तो वे दंग रह गए। उनके समर्पण से प्रभावित होकर, उन्होंने उन्हें शहनाई बजाना सिखाया, लेकिन अपने गुरु से उन्हें अपने संरक्षण में लेने के लिए भी कहा। एक महिला द्वारा शहनाई बजाने के विचार पर अविश्वास में अपना सिर हिलाते हुए, लेकिन उसके जुनून से प्रभावित होकर, बिस्मिल्लाह खान सहमत हो गए।पूरे भारत में शहनाई बजाने वाली केवल एक ही महिला कलाकार होने का कारण यह है कि इसे बजाने के लिए फेफड़ों की बहुत ताकत, सहनशक्ति और दृढ़ता की आवश्यकता होती है।

बागेश्वरी कहती हैं, "जब आप शहनाई बजाते हैं, तो आप शरीर के हर हिस्से का इस्तेमाल करते हैं क्योंकि यह सांसों पर नियंत्रण से जुड़ा होता है। दूसरे वाद्य यंत्र गले या हाथ का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनमें शारीरिक जुड़ाव की इतनी ज़रूरत नहीं होती। लेकिन मैंने इसे जारी रखा क्योंकि मुझे शहनाई बहुत पसंद थी, और कुछ भी मायने नहीं रखता था। इसे बस करना था,"बागेश्वरी ने शहनाई की धुन को उठाने और आज तक क़मर के घर में इसकी आवाज़ को गूंजाए रखने के लिए कितना संघर्ष किया।

वे बताती हैं कि उन्हें बिस्मिल्लाह खान के पुरुष छात्रों की अघोषित नाराजगी और उस शत्रुता का सामना करना पड़ा जिसका सामना उनके गुरु ने उनके साथ जुगलबंदी रिकॉर्ड करने का फैसला करने पर किया। "उन्होंने उनसे कहा: 'पगला गए हैं? लड़की के साथ जुगलबंदी कर रहे हैं।' लेकिन गुरुजी इस मायने में अद्वितीय थे कि उन्होंने वही किया जो उन्हें करना था, उन्होंने बस उन सभी को अनदेखा कर दिया। उस अनुभव ने मुझे और मजबूत बना दिया।"

उनके पिता ने यह सुनिश्चित करना था कि शादी उनके संगीत करियर पर कोई असर न डाले। "उन्होंने मेरे पति को हमारे दिल्ली वाले घर में रहने के लिए राजी किया, जहाँ हमारी संगीत की जड़ें हमेशा से रही हैं। और मेरे पति ने मेरे काम का भरपूर समर्थन किया है।"

1983 में, अग्रणी हिंदुस्तानी गायिका शन्नो खुराना ने एक सर्व-महिला संगीत कार्यक्रम श्रृंखला, 'भैरव से सोहिनी' शुरू की थी। इस अग्रणी महोत्सव में महिला कलाकारों ने एकल कलाकार और संगतकार दोनों के रूप में भूमिका निभाई। बागेश्वरी ने लहरें पैदा कर दीं - अपने संगीत के साथ-साथ एक ऐसे वाद्ययंत्र पर एक महिला की उपस्थिति के साथ, जिस पर पुरुषों का एकाधिकार था।

7. प्रथम महिला मृदंगम वादक- दंडमुडी सुमति राम मोहन राव

दंडमुडी सुमति राम मोहन राव का जन्म 16 अक्टूबर 1950 को आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले में हुआ था। उनके माता-पिता श्री निदुमोलु राघवैया और श्रीमती निदुमोलु वेंकटरत्नम्मा थे। छह साल की उम्र में सुमति ने अपने पिता से मृदंगम सीखना शुरू कर दिया, जो एक मृदंगम विद्वान थे। वे उन्हें संगीत समारोहों में ले जाते थे और तालवादन में उनकी रुचि का समर्थन करते थे। उन्होंने 10 साल की उम्र में अपना पहला प्रदर्शन दिया। 1964 में, मृदंगम में सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स पूरा करने के बाद, उन्होंने श्री दंडमुडी राम मोहन राव के अधीन अध्ययन किया। उन्होंने अपने गुरु से कई जटिल तकनीकें सीखीं और प्रदर्शन देना शुरू कर दिया।

उनकी शादी "मृदंगम उस्ताद" श्री दंडमुडी राम मोहन राव से हुई है। वह भारत की पहली महिला मृदंगम वादकों में से एक हैं, और पहली महिला लय विन्यासम कलाकार हैं। 2003 में, वह ऑल इंडिया रेडियो की "ए-टॉप" ग्रेड कलाकार बन गईं। वह यह ग्रेड हासिल करने वाली पहली महिला मृदंग वादक थीं। वह और उनके पति एकमात्र ए-टॉप ग्रेड मृदंगम जोड़ी बन गए और लय विन्यासम संगीत कार्यक्रम दिए। वह एक संगत कलाकार से एकल कलाकार बन गईं। उनके कई कार्यक्रम प्रसारित किए गए। बाएं और दाएं को समन्वयित करते हुए, वह श्रुति और लय में उत्कृष्ट संतुलन के साथ मधुर धुन के साथ बजाती हैं।

भीमसेन जोशी, एम.चंद्रशेखरन, इमानी शंकर शास्त्री, चिट्टी बाबू, एन. रमानी और यू. श्रीनिवास आदि के साथ वादन कर चुकीं हैं।

2000 में, उन्होंने लय वेदिका की स्थापना की, जो मृदंगम को बढ़ावा देने वाला एक संगठन है, छात्रों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित करता है, और निपुण विद्वानों को "लय प्रवीणा" की उपाधि प्रदान करता है।

2015 में, उन्होंने पहली बार 100 मृदंगम कलाकारों के एक समूह के साथ अपने गुरु/पति को श्रद्धांजलि के रूप में साठा मृदंग वाद्य निवाली नामक एक कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम तेलुगु बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स के रिकॉर्ड में दर्ज हुआ।

सुमति को 2021 में भारत का चौथा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार, पद्म श्री मिला।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत की मुख्य दोनों शाखों- उत्तर भारतीय शैली तथा कर्नाटक शैली में शास्त्रीय वादन में अपना विशिष्ट स्थान बनाने वाली महिला वादकों की सूची में अनेकों नाम जुड़ गए हैं। सभी के संघर्ष की कहानी से यही तथ्य सामने आता है कि उनकी सांगीतिक यात्रा में कठिन अभ्यास के साथ-साथ सामाजिक-पारिवारिक मिथ्या धारणाओं के साथ संघर्ष भी सम्मिलित था किन्तु इनके दृढ़ निश्चय एवं साधना के कारण इन्हें संगीत जगत में एक मुक़ाम हासिल हो पाया है, जो समस्त नारी जाति के लिए एक प्रेरणा है।

सन्दर्भ

1. पाठक अलका(अनुवादक), बी. चैतन्य, वाद्य यंत्र नैशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, 1993.
2. महाडिक,डॉ प्रकाश, तंत्रीवादक,प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,नई दिल्ली, 2002.
3. 3.सिंह, डॉ ठाकुर जयदेव, शर्मा प्रेमलता (सम्पादक)भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,2016
4. Mishra, dr susheela, among contemporary musicians, harman publishing house,new delhi, first edition-2001.
5. Mishra, dr susheela,great masters of hindustani music,hem publisherspvt. Ltd.new delhi, first edition 1981.
6. https://www.google.com/amp/s/www.thenewsminute.com/amp/story/features/i-ve-carved-my-own-path-meet-manonmani-south-india-s-first-female-sarangi-player-78173
7. https://www.hindustantimes.com/lifestyle/art-culture/dr-varsha-agarwal-the-first-classical-solo-santoor-player-captivates-audiences-during-rajasthan-forum-s-desert-storm-event-in-jaipur-101663674871003.html
8. https://www.hclconcerts.com/real-stories-unreal-feats/Varsha-Agarwal.html